ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 120-123

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

भारत–रूस आर्थिक एवं वाणिज्यिक सम्बन्ध
(विशेष सन्दर्भः वर्ष 1991 ई0 से 2005 ई0 तक)

विजय सिंह

शोध अध्येता पाश्चात्य इतिहास विभाग,लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ0प्र0), भारत

Received- 08.04.2020, Revised- 12.04.2020, Accepted - 19.04.2019 E-mail:vijaysingh2@gmail.com

सारांश : *जब हम रूस और भारत की बीच आर्थिक और व्यापारिक सम्बन्धों को देखते हैं तो, वर्ष 1990–91 एक ऐतिहासिक घटना प्रतीत होती है। इसी समय महान सोवियत संघ का विघटन हुआ और यहीं वह समय था जबकि भारत में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (एल–पी–जी) की प्रक्रिया के साथ आर्थिक उदारीकरण का प्रारम्भ हुआ। इसके परिणामस्वरूप भारत की अर्थव्यवस्था नें तीव्र विकास दर हासिल किया वहीं दूसरी तरफ रूसी अर्थव्यवस्था की विकास दर नकारात्मक रही। रूस नें इस स्थिति से निपटने के लिए पश्चिम की ओर देखना प्रारम्भ किया जिसने भारत–रूस आर्थिक सम्बन्धों को प्रभावित किया।*

कुंजीभूत शब्द– आर्थिक, व्यापारिक, ऐतिहासिक घटना, सयेवियत संघ, विघटन, वैश्वीकरण, उदारीकरण, पश्चिम ।

सोवियत संघ के विघटन से पहले भारत के साथ उसका चार दशक से भी अधिक समय तक राजनीतिक और आर्थिक संबंध था। सोवियत संघ ने स्टील, माइनिंग, हैवी इंजीनियरिंग, ऊर्जा आदि सहित भारत में कई बुनियादी उद्योगों के विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाई। यह 12–15 प्रतिशत व्यापार के साथ भारत का एक व्यापक भागीदार देश था। विघटन के बाद भी पिछले दशकों में घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण राजनीतिक संबंध बने रहे। भारत और रूस के बीच हितों में कोई टकराव नहीं हैं, और यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि दोनों देशों के बीच विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर विचारों की समानता है। लेकिन इन सब के बावजूद भी शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात भारत और रूस के बीच आर्थिक संबंध संतोषजनक नहीं रहे।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात 1950 ई. में समुद्री व्यापर के लिए दोनों देशों के बीच समझौता हुआ तथा इसके पश्चात 1951 में वस्तु विनिमय समझौते के तहत भारतीय चाय और जूट के बदले में सोवियत रूस से गेहूं की आपूर्ति के लिए समझौता हुआ। 1953 में उनके बीच पहले दीर्घकालिक व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, और तब से सोवियत रूस के विघटन तक सात दीर्घकालिक समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए थे। यह समझौते आमतौर पर पंचवर्षीय योजनाओं के अनुरूप पांच वर्ष के थे। इस कारण दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापारिक संबंध व्यापक, गहरा और संस्थागत हो गए। यह समझौते समानता और पारस्परिक लाभ के सिद्धांत पर आधारित थे।[1]

1953 में सोवियत संघ और भारत के बीच व्यापार टर्नओवर 2 करोड़ रुपये से कम था। लेकिन, जैसा कि तालिका 1 से स्पष्ट है कि भारतीय निर्यात वर्ष 1990–91 में 5255 करोड़ रुपये हो गया। इसी तरह सोवियत संघ से आयात 2528 करोड़ रुपये हो गया।

तालिका–1 भारत–सोवियत संघ व्यापारिक सम्बन्ध वर्ष 1960–61 से वर्ष 1990–91 तक (करोड़ रू. में)

वर्ष	निर्यात	कुल निर्यात में प्रतिशत हिस्सा	आयात	कुल आयात में प्रतिशत हिस्सा
1960–61	29	4.5	16	1.4
1970–71	210	13.7	106	6.5
1980–81	1226	18.3	1014	8.1
1990–91	5255	16.1	2528	5.9

स्रोतः इकोनोमिक सर्वे ऑफ इंडिया

इस प्रकार वर्ष 1990–91 तक सोवियत संघ और भारत के बीच व्यापारिक कारोबार 8000 करोड़ रुपये हो गया। वर्ष 1960–61 में भारत अपने कुल निर्यात का 4.5 प्रतिशत सोवियत संघ को निर्यात कर रहा था। वर्ष 1980 में यह हिस्सा 18.3 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार 1960–61 में भारत सोवियत संघ से अपने कुल आयात का 1.4 प्रतिशत आयात कर रहा था। वर्ष 1980–81 में भी यह हिस्सा 8.1 प्रतिशत हो गया, और 1990–91 तक काफी अधिक रहा।

तालिका –2 भारत–रूस व्यापार (1991–92 से 1996–97) (मिलियन डॉलर में)

वर्ष	निर्यात	आयात	व्यापार संतुलन
1991–92	1640.0	728.5	911.5
1992–93	607.2	254.6	352.6
1992–93	649.2	257.0	392.2
1994–95	807.2	504.4	302.8
1995–96	1045.0	856.3	188.7
1996–97	811.2	628.4	182.8

श्रोतः डायरेक्टर जनरल ऑफ कमर्शियल इंटेलिजेंस एंड स्टेटिस्टिक्स कोलकाता

1990 का दशक रूसी व्यापर के लिए एक बहुत ही कठिन दौर था। यह परिवर्तन केवल रूस के अपनी आर्थिक प्रणाली को बदलने के कारण ही नहीं था, बल्कि यह परिवर्तन उस अवधि में हो रहा था, जब रूसी अर्थव्यवस्था

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

को एक के बाद एक संकट का सामना करना पड़ रहा था। नतीजतन, रूसी अर्थव्यवस्था पहले ही घटकर वर्ष 1990 की आधी हो गई थी, तथा 1998 में एक और वित्तीय और आर्थिक संकट ने अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। वहीं 1990 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था अतीत में किसी भी समय की तुलना में तेजी से आगे बढ़ी। 1990 और 2000 के बीच भारत की औसत वार्षिक विकास दर 06 प्रतिशत थी वहीं दूसरी तरफ इसी दौर में रूस की औसत वार्षिक विकास दर –4.8 प्रतिशत थी। भारत–रूस आर्थिक संबंधों को भी इस संदर्भ में देखा जाना चाहिए। इसके पश्चात विगत वर्षों में, रूस की अर्थव्यवस्था ने मजबूत वृद्धि का अनुभव किया। इसके अलावा, भारतीय निजी क्षेत्र रूसी विकास का निरंतर लाभ उठाने में बहुत धीमा रहा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत ने सोवियत संघ के साथ बहुत अच्छे व्यापार–संबंध का आनंद लिया। लेकिन यह सब 1990–91 में सोवियत संघ के पतन के साथ बदल गया। विभिन्न कारणों से रूस और भारत के बीच व्यापार की मात्रा में गिरावट शुरू हुई। यह तालिका 2, 3 और 4 से स्पष्ट है।

तालिका–3 भारत द्वारा रूस को निर्यात (वर्ष 1997–98 से वर्ष 2005–06 तक) (लाख रू. में)

क्रमांक	वर्ष	कुल वैश्विक निर्यात	रूस को कुल निर्यात	प्रतिशत	प्रतिशत वृद्धि	
					रूस	वैश्विक
1	1997–98	12,927,770.02	354,167.67	2.7396	22.99	8.80
2	1998–99	13,975,315.65	298,457.29	2.1356	–15.75	8.10
3	1999–00	15,956,177.56	410,761.02	2.5743	37.63	14.17
4	2000–01	20,357,101.07	406,139.07	1.9951	–1.13	27.58
5	2001–02	20,901,797.34	380,668.93	1.8212	–6.27	2.68
6	2002–03	25,513,727.66	340,783.11	1.3354	–10.50	22.06
7	2003–04	29,336,674.75	327,979.93	1.1180	–3.73	14.98
8	2004–05	37,553,952.62	283,636.04	0.7557	–13.52	27.94
9	2005–06	45,641,786.15	324,589.03	0.7112	14.44	21.60

श्रोतः मिनिस्ट्री ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री, डिपार्टमेंट ऑफ कॉमर्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया

तालिका–4 भारत द्वारा रूस से आयात (वर्ष 1997–98 से वर्ष 2005–06 तक) (लाख रू. में)

क्रमांक	वर्ष	भारत का कुल वैश्विक आयात	रूस को कुल आयात	प्रतिशत	प्रतिशत वृद्धि	
					रूस	वैश्विक
1	1997–98	15,417,628.82	239,014.97	1.5503	27.55	10.98
2	1998–99	17,833,185.44	229,513.64	1.2870	–3.98	15.67
3	1999–00	21,552,843.89	270,042.60	1.2529	17.66	20.86
4	2000–01	23,087,276.04	236,468.05	1.0243	–12.42	7.12
5	2001–02	24,519,971.86	255,362.53	1.0416	7.99	6.21
6	2002–03	29,720,587.40	286,764.04	0.9650	12.30	21.21
7	2003–04	35,918,766.37	440,983.87	1.2279	53.76	20.83
8	2004–05	50,106,454.03	594,328.52	1.1861	34.78	39.53
9	2005–06	66,040,890.33	895,394.01	1.3557	50.64	31.80

श्रोतः मिनिस्ट्री ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री, डिपार्टमेंट ऑफ कॉमर्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया

1980–81 में, भारत के कुल निर्यात का 18.3 प्रतिशत हिस्सा सोवियत संघ का था, लेकिन वर्ष 1990–91 के बाद इसमें गिरावट शुरू हुई, वर्ष 2003–04 में घटकर 1.11 प्रतिशत रह गई। इसी प्रकार, भारत ने सोवियत संघ से 1980–81 में अपने कुल आयात का 8.1 प्रतिशत आयात किया। लेकिन लगातार गिरावट से, यह वर्ष 2002–03 में 0.96 प्रतिशत हो गया। तालिका 3 और 4 में प्रस्तुत डेटा बताते हैं कि 2001–2006 की अवधि के दौरान निर्यात और आयात दोनों में व्यापार की मात्रा तेजी से बढ़ रही है। लेकिन यह देखा जा सकता है कि निर्यात की तुलना में आयात की मात्रा अधिक है, जो भारत के साथ व्यापार में रूसी की लाभप्रद स्थिति को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, 2005–06 में भारत अपनें कुल वैश्विक निर्यात का 0.71 प्रतिशत रूस को निर्यात किया जबकि इसी अवधि में भारत नें अपने कुल वैश्विक आयत का 1.35 प्रतिशत रूस से आयात किया। भारत से निर्यात की वृद्धि उसी दर से नहीं हुई, जिस दर से आयात में हुई। इसलिए, उपरोक्त विश्लेषण से यह समझा जा सकता है कि यद्यपि रूस के साथ व्यापार संबंध बढ़ रहे हैं, लेकिन व्यापार की मात्रा में वृद्धि भारत की तुलना में रूस के लिए अत्यधिक लाभकारी रहा।

रूस और भारत के बीच व्यापार की मात्रा में अचानक गिरावट एक ऐसी पहेली नहीं है, जिसे हल नहीं किया जा सकता है। यह गिरावट तब समझ में आती है जब हम उन कारणों को देखते हैं जो इसे प्रेरित करते हैं।

सोवियत संघ के दुर्भाग्यपूर्ण पतन ने इन व्यापार संबंधों के आधार को बदल दिया। इस पतन के बाद, नए रूस की अर्थव्यवस्था एक दुष्चक्र में फंस गई। यह एक समय था जब रूस का सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) प्रति वर्ष 20 से 25 प्रतिशत घट रहा था, मुद्रास्फीति 1,000 प्रतिशत की वार्षिक दर से आसमान छू रही थी और बजट घाटा जीएनपी के एक–पांचवें और एक–चौथाई के बीच था।[2]

इसका रूस–भारतीय व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना तय था। सोवियत दिनों के दौरान सोवियत संघ और भारत के बीच अधिकांश व्यापार राज्य संगठनों और सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों के माध्यम से हुआ था। लेकिन नए रूस के राष्ट्रपति, बोरिस येल्तसिन के समय रूस में राज्य संगठनों और सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों ने अपना आकर्षण खो दिया। नया रूस खुद को उस स्थान से बाहर निकालने के लिए पश्चिम की ओर देख रहा था। राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन की राय में, रूस में पश्चिमी कंपनियों द्वारा किए गए निवेश और आईएमएफ तथा विश्व बैंक जैसे संगठनों द्वारा दिए गए धनध्दान के द्वारा रूसी अर्थव्यवस्था बर्बाद होने से बच सकता है। रूस पश्चिमी धन और निवेश का स्वागत करने के लिए पीछे की ओर झुक गया। उसी समय के आसपास, यानी 1990–91 में, भारतीय अर्थव्यवस्था भी बड़े पैमाने पर संरचनात्मक परिवर्तनों से गुजर रही थी।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

यानी उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (एल–पी–जी) भारतीय अर्थव्यवस्था के नए मार्गदर्शक सिद्धांत बन रहे थे। वर्ष 1991 के आसपास दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं में हुए इन अभूतपूर्व संरचनात्मक परिवर्तनों ने उनके बीच व्यापारिक संबंधों को प्रभावित किया। इतना ही नहीं, उन दिनों भारतीय राजनीतिक परि.श्य काफी अशांत था यह भी अस्थिरता की विशेषता थी।[3]

रूस के विघटन के बाद प्रारंभिक वर्षों में द्विपक्षीय संबंधों का मामला न केवल अनिश्चित था, बल्कि उच्च स्तर के संदेह से भी परिलक्षित था। समाज के समाजवादी स्वरुप से लेकर बाजार अर्थव्यवस्था तक संक्रमण के इस दौर में, रूसी नेतृत्व ने भारत सहित अपने पुराने सहयोगियों के प्रति पारंपरिक .ष्टिकोण को छोड़ दिया। रूस के लिए पश्चिमी सहायता आवश्यक थी, इसलिए लोकतंत्र, बाजार में सुधार और बहुलवाद पर ध्यान केंद्रित किया गया। फिर भी पूर्ववर्ती क्षेत्रों में अचानक बदलाव रूस के लिए महंगा साबित हुआ– खाड़ी संकट, युगोस्लाविया संकट और क्रायोजेनिक रॉकेट विवाद इत्यादि, रूस की कमजोरी का पर्याप्त प्रमाण था। इस तरह से यह अपेक्षित था कि 1991–92 में भारत के साथ उसके संबंध प्रभावित हों।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यह एक ऐसा समय था जब दोनों देशों को विदेशी पूंजी के बड़े प्रवाह की आवश्यकता थी। चूँकि दोनों की जरूरतें समान थीं, इसलिए वे स्पष्ट रूप से एक–दूसरे की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकते थे।[4]

रूस विविधीकरण की अपनी खोज में जर्मनी, इटली, अमेरिका, जापान और चीन से संपर्क कर रहा था, जबकि भारत–रूस व्यापार रूसी पक्ष द्वारा लगभग उपेक्षित था।[5]

1990 के दशक ने भारत–रूस संबंधों में सबसे कठिन दशकों में से एक का प्रतिनिधित्व किया। हालांकि शुरुआती दो साल द्विपक्षीय संबंधों में लगभग गैर–शुरुआत वाले थे, राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन की भारत यात्रा के दौरान जनवरी 1993 में भारत–रूस संबंधों में एक नए चरण की शुरुआत हुई। राष्ट्रपति येल्तसिन की भारत यात्रा के दौरान रुपया–रूबल विनिमय दर के मुद्दे को हल किया गया था। 1998 में व्यापार को सुचारू बनाने और बढ़ाने के लिए दोनो देशों के बीच संबंधों को और बेहतर बनाया गया।6 रूसी राष्ट्रपति येल्तसिन की यात्रा के साथ संबंधों में गति आई। हालांकि राजनीतिक–रणनीतिक संबंध मजबूत हो गए लेकिन 1993 के बाद का चरण आर्थिक सहयोग के .ष्टिकोण से बहुत उत्साही नहीं था। यह 2000 के दशक में था कि दोनों देशों को आर्थिक सहयोग की अनिवार्यता का एहसास हुआ।

राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन की अक्टूबर 2000 में भारत यात्रा के दौरान सामरिक साझेदारी की संधि पर हस्ताक्षर किए गए। समझौते का एक पूरा खंड व्यापार और आर्थिक मुद्दों से संबंधित है। दोनों देश व्यापार और आर्थिक संबंधों के विस्तार के लिए निकट सहयोग को मजबूत करने पर सहमत हुए। धातु विज्ञान, ईंधन, ऊर्जा, सूचना प्रौद्योगिकी, बैंकिंग और वित्त, संचार आदि सहित कई क्षेत्रों की पहचान की गई है। कुछ अन्य चीजें जैसे प्रक्रियाओं को सरल बनाने और गैर–टैरिफ बाधाओं को हटाने आदि का भी उल्लेख किया गया है। हालांकि, राजनीतिक और रक्षा क्षेत्रों के विपरीत, आर्थिक मोर्चे पर कोई तात्कालिक परिणाम नहीं देखा जाना चाहिए।

एक अन्य कारक जो भविष्य में रूस और भारत के बीच एक अच्छे आर्थिक संबंध का वादा करता है, वह तथ्य यह है कि अभी, दोनों देशों की अर्थव्यवस्था मजबूत रास्ते पर बढ़ रही है। रूस और भारत को आज दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक होने का गौरव प्राप्त है।7 रूसी अर्थव्यवस्था में सुधार का एक और सबूत सितंबर 2000 में अंतरराष्ट्रीय बैंक रेटिंग एजेंसी है। थॉमस बैंक वाच ने रूस की ऋण रेटिंग को ब्ब से ठ में अपग्रेड कर दिया।[8] इस प्रकार रूसी अर्थव्यवस्था की बढ़ती ताकत हमें रूस–भारत व्यापार संबंधों में सुधार के बारे में आश्वस्त करती है।

अब जिस प्रश्न पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि वे कौन से कारक हैं जो दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग को प्रभावित करते हैं? दोनों देशों के पास विशाल संसाधन और क्षमता है, फिर भी 2005 में व्यापर लगभग 3.1 बिलियन डॉलर है, जो कि भारत के अमेरिका, चीन, यूके और जर्मनी जैसे अन्य देशों के व्यापार से कई गुना कम है। जबकि रूस में कुल भारतीय निवेश लगभग दो बिलियन डॉलर है, वहीं रूसी निवेश लगभग 160 मिलियन डॉलर है। जाहिर है, इसका एक प्रमुख कारक सुसंगत और प्रेरक राजनीतिक कौशल और .ढ़ता का अभाव रहा। व्यापारिक संभावनाओं के संबंध में दोनों देशों के बीच जानकारी की कमी ने इस संबंध में नकारात्मक रूप में काम किया है। इसी तरह, अगर कोई व्यापारिक आयोजन है तो भारतीय व्यापारियों को व्यापार मेलों आदि में शामिल होने के लिए तत्काल वीजा जारी होना चाहिए। प्रस्तावित रूस–भारत व्यापार परिषद एक दूसरे के देशों में संभावित व्यापारिक उपक्रमों को सुचारू और तीव्र करने और कठोर वीजा व्यवस्था और नौकरशाही समस्याओं जैसे मुद्दों का समाधान करने के लिए काम कर सकता है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि सोवियत संघ के विघटन के पश्चात भारत–रूस आर्थिक संबंधों में तमाम उतर चढाव देखने को मिलता है। पूर्व सोवियत संघ के पतन के बाद के लगभग एक दशक तक रूस और भारत के बीच व्यापार की मात्रा में लगातार गिरावट आ रही थी। लेकिन यह भी सच है कि दोनों देशों की सरकारों ने इस गिरावट पर अपनी आंखें कभी नहीं बंद की। वे न केवल इस गिरावट–प्रवृत्ति के बारे जानते थे, बल्कि इसे दूर करने के लिए सभी संभव कदम उठा रहे थे। यह अलग बात है कि उठाए गए कदम अपर्याप्त साबित हुए। तथा भारत–रूस व्यापारिक संबंधों में बहुत अधिक सुधार देखने को नहीं मिला। यद्दपि 2000 के दशक में हमें दोनों देशों के बीच वाणिज्य व्यापर में कुछ सुधार देखने को मिलता है, लेकिन फिर भी 2005–06 तक यह भारत के औशत वैश्विक व्यापर की तुलना में बहुत कम रहा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आर.के.वाधवा, "इकोनोमिक एंड ट्रेड रिलेशन बिटवीन इंडिया एंड रशिया," इन वी.डी.चोपड़ा(एड) न्यू ट्रेंड्स इन इंडो–रशियन रिलेशंस देहली कल्पाज, 2003, पृ0 231।
2. मार्शल आई. गोल्डमेन, "नीडेडः अ रशियन इकोनोमिक रेवोलुशन," करेंट हिस्ट्री (कनाडा), वॉल्यूम 91, नं.56 (अक्टूबर 1992), पृ0 314–320
3. जॉन्स एडम, "रिफोर्मिंग इंडियाज इकोनोमी इन एन एरा ऑफ ग्लोबल चेंज," करेंट हिस्ट्री (कनाडा), वॉल्यूम 95, नं.600 (अप्रैल 1996), पृ0 152।
4. वही ।
5. राजन हर्षे, "इंडिया एंड रशिया इन ए चेंजिंग वर्ल्ड," इकोनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली (न्यू देहली), वॉल्यूम 33, नं.9 (फरवरी 1998), पृ0 457–60।
6. आर.के.वाधवा, "इकोनोमिक एंड ट्रेड रिलेशंस बिटवीन इंडिया एंड रशिया," इन वी.डी.चोपड़ा (एड.) न्यू ट्रेंड्स इन इंडो–रशियन रिलेशंसय देहली कल्पाज, 2003, पृ0 231।
7. द हिन्दू 10 नवम्बर 2003।
8. वही।

*****